VETERINARY TODAY
INTERNATIONAL
ISSN 2583-8288

पशुओं में टीकाकरण

दीपिका सिंह[1], अमृता प्रियदर्शी[2], प्रत्यांशु श्रीवास्तव[3], पुष्पा गौतम[4]

[1,2,3,4] भा.कृ.अनु.प.- भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज़तनगर, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

DOI:10.5281/Veterinarytoday.18754078

परिचय

मनुष्यों की तरह पशुओं को भी बीमारी से बचाने के लिए टीकाकरण बहुत महत्वपूर्ण है। यह उन्हें संक्रमण से बचाता है और उन्हें कई बीमारियों से बचाता है। पशुपालक नियमित टीकाकरण से न सिर्फ दवा की लागत कम कर सकते हैं बल्कि बेहतर उत्पादन भी पा सकते हैं। टीकाकरण जीवों के संचरण को कम करता है और अक्सर बीमार जानवरों का इलाज करने से अधिक फायदेमंद होता है। पालतू जानवर रेबीज, परवोवीरस, डिस्टेंपर और हेपेटाइटिस से पीड़ित हैं। टीका पशुओं को विभिन्न रोगों से बचाता है और उनकी सुरक्षात्मक प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। टीका पशुओं को संक्रमण, जीवाणु विषाणु, परजीवी, प्रोटोजोआ और कवक से बचाने के लिए तैयार करता है।

टीकाकरण का सिद्धांत निम्न है

टीकाकरण कार्यक्रम का लक्ष्य पशुओं को विभिन्न बीमारियों से बचाने द्वारा पशुओं और जनता के स्वास्थ्य को सुधारना है । टीकाकरण से पशुओं के शरीर में एक रोग प्रतिरोधक क्षमता (एन्टीबाडी) विकसित होती है । जो पशुओं को उस विशिष्ट बीमारी से बचाते हैं । विभिन्न पशु जाति के लिए अलग-अलग टीका कार्यक्रम की जरूरत होती है पुनः: टीकाकरण या बूस्टर का उद्देश्य शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को निरंतर मात्रा में बनाये रखना और उनके प्रतिकूल प्रभाव को कम करना है। प्रत्येक बीमारी का टीका अलग है, और एक बीमारी का टीका सिर्फ उसी बीमारी से बचाव देता है। बीमारी को फैलने से रोकने के लिए, रोगग्रस्त गांव या समूह के आसपास के स्वस्थ पशुओं को टीके लगाकर एक सुरक्षित क्षेत्र बनाना चाहिए। कुछ विषाणुओं और जीवाणुओं से बीमार होने से बचने के लिए सीरम भी उपलब्ध है। इसमें प्रतिरक्षा या एन्टीबाडी होते हैं जो बीमारी के विषाणुओं या जीवाणुओं से उत्पन्न विष को रोकते हैं। जैसे टिटेनस के लिए प्रत्येक सीरम।

वर्तमान में किसानों का एक प्रमुख लक्ष्य है, साथ ही पशुओं के स्वास्थ्य का भी महत्वपूर्ण स्थान है, ऐसा इसलिए है क्योंकि हर साल हजारों दुधारू पशु खतरनाक बीमारियों जैसे गलघोंटू, लंगडिया, खुरपका और मुंहपका के कारण मर जाते हैं, जिससे पशुपालकों को आर्थिक क्षति होती है। यह आम बात है कि रोकथाम उपचार से बेहतर है।

पशुओं में पूर्णतः सत्य है, और यह नीति और अर्थ दोनों में लागू होता है वास्तव में, टीकाकरण बहुत से विषाणुजनित रोगों को रोकथाम करने का एकमात्र उपाय है। पशुओं को विभिन्न बीमारियों से बचाने के लिए टीकाकरण केवल सही समय पर, सही मात्रा में, सही स्थान पर, सही रास्ते पर और सही टीकों के प्रयोग से संभव है। टीकाकरण शरीर में कमजोर या मृत या मृत रोगाणुओं को डालकर उन रोगाणुओं के खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता बनाना है।

टीकाकरण की आवश्यकता

टीकाकरण ने विश्व भर में करोड़ों जानवरों को विभिन्न संक्रामक बीमारियों से बचाया है। यही कारण है कि पशुपालकों का दायित्व है कि वे अपने पशुओं को सही टीकाकरण शुरुआत में पशु चिकित्सक की सलाह पर करायें और हर वर्ष एक बार फिर करायें। यह देखा गया है कि पषुओं में कई रोगों के लक्षण नहीं दिखते, लेकिन उनके वातावरण में पाये जाने के कारण टीकाकरण की सलाह दी जाती है। आज हम जूनोटिक रोगों (जो जानवरों से मनुष्यों में तथा मनुष्यों से जानवरों में फैलते हैं) की गंभीरता को अनदेखा नहीं कर सकते, जैसे रैबीज, एन्थ्रेक्स, ब्रसेलोसिस, गाय का चेचक, क्षय रोग आदि।

टीकाकरण पशुओं को संक्रामक और घातक जूनोटिक रोगों से बचाता है टीका शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र को जगाता है, जो एन्टीबाडी बनाता है। यह एन्टीबाडी शरीर को वातावरण में मौजूद छोटे जीवों से लड़ने की क्षमता देता है। टीकाकरण किए गए पशुओं में एक ही रोगाणु फिर से आक्रमण करता है तो शरीर में उपस्थित एन्टी बाडी, या प्रतिपिंड, रोगाणु को मार डालकर उसे रोग से बचाता है। शरीर में टीके कई कार्य करते हैं अतः टीके केवल स्वस्थ या बीमार पशुओं को ही देने की सलाह दी जाती है। पशुपालकों को टीके की तिथि और मरने की तिथि भी जाननी चाहिए।

टीककरण और बीमारी से बचाव की शर्तें

पशुओं को टीकाकरण कार्यक्रम से बचाया जाता है टीकाकरण किये गये पशुओं में सुरक्षा में कमी होने पर भी बीमारी के लक्षण नहीं दिखते, इसलिए टीकाकरण पशुओं की स्वास्थ्य सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। टीकाशुल्क पशुओं को बीमार पशुओं या टीकाशुल्क पशुओं से अलग रखते हैं। टीकाकरण से पूर्व पशुओं का अंतः पशु चिकित्सक की सलाह पर परजीवी नाशक दवा दी जानी चाहिए। टीकाकरण के तुरंत बाद पशुओं को गर्मियों से दूर रखें और उन्हें बहुत व्यायाम न करें। खनिज मिश्रण को चारों में कम से कम चालीस दिन तक प्रयोग करें। टीकाकरण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए टीकों को सही तापमान पर सुरक्षित रखना आवश्यक है। **पशुओं को निम्न रोगों से टीकाकरण करना चाहिए**

खुरहा विकार:- पशुओं में यह एक प्रमुख रोग है जो विषाणु से फैलता है। यह बीमारी फैल सकती है।इस बीमारी में आईल एडजूवेंट टीका दी जाती है। गौवंशीय और भैंसवंशीय पशुओं को पहली टीका एक महीने की उम्र पर और दूसरी टीका छह महीने की उम्र पर दी जानी चाहिए. इसके बाद प्रत्येक वर्ष टीकाकरण कराना चाहिए। मार्च से

अप्रैल या सितंबर से अक्टूबर तक प्रति पशु (चमड़ी के नीचे) 2 मिली टीके लगाना चाहिए। प्रति पशु (चमड़ी के नीचे) एक मिलीग्राम देना चाहिए।

गलघोटू:- यह एक जीवाणु-जनित रोग है जो बरसात के मौसम में होता है, इससे बचने के लिए वर्षा ऋतू से पहले और शीट ऋतू की शुरुआत में टीकाकरण करना चाहिए। इस बीमारी में एडजूवेंट टीका दी जाती है। 6 माह की उम्र में गौवंशीय और भैंसवंशीय पशुओं को पहली बार प्रति वर्ष टीका दी जाती है। 2 मिली टीके प्रति पशु (चमड़ी के नीचे) मानसून आने से पहले देना चाहिए। प्रति पशु (चमड़ी के नीचे) एक मिली देना चाहिए।

लगड़ी:- क्षेत्र में पॉलीवेलेन्ट टीका दी जाती है। 6 माह की उम्र में गौवंशीय और भैंसवंशीय पशुओं को पहली बार प्रति वर्ष टीका दी जाती है। 5 मिली टीके प्रति पशु (चमड़ी के नीचे) मानसून आने से पहले देना चाहिए।

ब्रूसीलोसिस:- यह पशुओं में गर्भाधान के तीसरे चरण में गर्भपात का सबसे बड़ा कारण है। मादा बछड़ों को इस बीमारी का पहला टीका चार से छह महीने की उम्र में दो मिली देना चाहिए। गाभिन पशु को यह टीका नहीं देना चाहिए।

एन्थ्रेक्स:- इस बीमारी में स्पोर टीका दी जाती है साल में एक बार पशुओं को इस टीके की 1 मिली मात्रा देना चाहिए।

पीपीआर:- यह रोग भेड़ों और बकरियों के लिए बहुत खतरनाक है। पहली टीका चार महीने की उम्र में करनी चाहिए और दूसरी टीका तीन वर्ष की उम्र में करनी चाहिए। एक मिली चमड़ी के नीचे दी जाती है। यह टीक मानसून से पहले करना चाहिए।

थाईलेरियोसिस:- तीन महीने या इसके ऊपर की उम्र में गौवंशीय और भैंसवंशीय पशुओं को पहली बार टीकाकरण करने के लिए तीन मिलीग्राम को स्थानीय या एनडेमिक स्थान पर चमड़ी के नीचे से देना चाहिए। 3 महीने तक इसका प्रतिरोध रहता है।

निष्कर्ष:- अतः टीकाकरण पशुओ को बहुत से बीमरीयो से बचाने मे मदद करता है , कहावत भी है - बीमरी से बचाव भला , जिससे पशुपलको को बहुत ही फयदा मिलता है|